कथा सरिता

धीरज का फल मीठा

भगवान बुद्ध भ्रमण कर रहे थे। मार्ग में उन्हें प्यास लगी। आनन्द समीपस्थ झरने से पानी लाने गए। उन्होंने देखा कि कुछ समय पूर्व ही वहां से बैलगाड़ियां गुजरी है तथा बैलों ने सारा जल गंदा कर दिया है। वे वापस लौट आए और बुद्धदेव से बोले, यहां का जल गंदा है। मार्ग में हमें जो नदी मिली थी, मैं वहां का जल लाता हूँ। किन्तु, बुद्धदेव बोले, झरने से ही जल ले आओ। आनन्द जब झरने के पास गए, तो उन्होंने देखा कि जल अभी भी साफ नहीं हुआ है। वे वापस आ गए और बुद्धदेव को उन्होंने फिर जल के गंदा होने की बात बताई। बुद्धदेव ने उन्हें पुन: झरने का ही जल लाने भेजा, किन्तु गंदा जल देख आनन्द की इच्छा न हुई कि उसे अपने स्वामी को पिलाया जाए। वे लौट आए और बुद्धदेव ने पुन: उन्हें वापस भेजा। ऐसा तीन बार हुआ। चौथी बार जब आनन्द वहां गए, तो देखा कि मिट्टी और सड़े-गले पत्ते नीचे बैठ चुके हैं तथा पानी आईने की भांति चमक रहा है। इस बार वे जल लेकर लौटे। तब बुद्धदेव बोले, आनन्द! हमारे जीवन रूपी जल को भी कुविचार रूपी बैल प्रतिदिन गंदा करते रहते हैं और तब हम जीवन से पलायन करते हैं। किन्तु, हमें भागना नहीं चाहिए, बल्कि मन रूपी झरने के शांत होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। इसके लिए धीरज की आवश्यकता है। तभी सब कुछ स्वच्छ दिखाई देगा, ठीक इस झरने की तरह!

जमा पुण्य

हाजी मुहम्मद नामक एक मुसलमान संत हुए हैं। उन्होंने साठ बार हज-यात्रा की थी और वे प्रतिदिन नियमित रूप से पांच वक्त नमाज पढ़ते थे। एक दिन उन्होंने स्वप्न में देखा कि स्वर्ग और नरक की सीमा पर एक फरिश्ता एक छड़ी लेकर खड़ा है। जो भी दिवंगत आत्मा वहां आती, उससे वह उसके शुभ और अशुभ कर्मों के बारे में पूछताछ करता और उनके अनुसार स्वर्ग या नरक में भेजता था। जब हाजी मुहम्मद की बारी आई, तो फरिश्ते ने पूछा - तूने अपने जीवन में कौन-से शुभ कर्म किए हैं? हाजी ने उत्तर दिया - मैंने साठ बार हज किया है।

हाँ, यह तो ठीक है, मगर क्या तू जानता है कि इसका तुझे बड़ा गुमान है? इसी कारण जब भी कोई तुझसे तेरा नाम पूछता था, तो तू 'हाजी मुहम्मद' बताता था। तेरे इसी गुमान के कारण हज जाने का जो फल तुझे मिलना था, वह सारा का सारा नष्ट हो गया। इसके अलावा यदि तूने कोई अच्छा काम किया हो, तो बता दे।

'मैं साठ साल से पांचों वक्त नमाज पढ़ता आ रहा हूँ।' तेरा वह पुण्य भी नष्ट हो गया। वह क्यों? याद है तुझे, एक बार कुछ धर्म जिज्ञासु तेरे पास आ गए थे। उस दिन तूने केवल दिखावे के कारण रोज से ज्यादा देर तक नमाज पढ़ी थी। यही कारण है कि तेरी साठ बरस की नमाज की तपस्या निष्फल हो गई।

फरिश्ते की यह बात सुन हाजी को बेहद दु:ख हुआ। पश्चाताप - दग्ध हो उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। अचानक उनकी आँख खुली और उन्होंने अपने को सोता हुआ पाया। वे जान गए कि यह तो ख्वाब था, किन्तु अब उनकी अंदर की आँखें भी खुल गई। इस तरह स्वप्न में मिली सीख ने उन्हें पूरी तरह बदल डाला। गरूर और नुमाइश से उन्होंने हमेशा के लिए तौबा कर ली और वे नम्र बन गए। निर्मल स्वभाव, निर्मल वाणी व निर्मल कर्म ही पुण्य का खाता बढ़ाते हैं।

सार्थक जीवन का गुर

एक दिन दो राहगीर आपस में झगड़ रहे थे। एक का कहना था,मेरे सामने तुम्हारी हस्ती कुछ नहीं है। मेरे अंक में अनमोल निधियां छिपी हैं। तुम्हारे पास क्या है? दूसरे ने कहा,मियां, अपने मुंह क्यों मिट्ठू बनते हो? जिसे तुम अनमोल निधि कहते हो, उसका दो कौड़ी का भी मूल्य नहीं है। मुर्दों की कोई कीमत होती है क्या?

पहला मुंह बिगाड़कर बोला, मेरी तिजोरी में जो बंद है, उसका मूल्य तुम क्या समझो! अरे, उसी पर तो आदमी जीता है!

दूसरे ने विद्रूप से कहा, आदमी को मुर्दे नहीं, सपने जीवित रखते हैं। आदमी की आंखें आगे देखती हैं, पीछे नहीं। यदि व्यक्ति के पास सपने न हों,आशा न हो तो वह विष खाकर मर जायगा। इन दोनों के अपने-अपने तर्क थे,वे एक-दूसरे के आगे झुकने को तैयार नहीं थे।

तभी एक तीसरा राहगीर आ गया। उसने दोनों को लड़ते देखकर लड़ाई का कारण पूछा। दोनों ने अपनी-अपनी बात बड़े जोश-खरोश से कही और अंत में दोनों ने कहा- यह माने या न माने, मेरी हस्ती के आगे यह ठहर नहीं सकता।

तीसरे राहगीर ने उनकी बात बड़े ध्यान से सुनी। फिर बोला,तुम दोनों का लड़ना व्यर्थ है। जो बीत गया, वह आनेवाला नहीं है। उसकी याद में समय खोना समय को बरबाद.....

दूसरा बीच में ही बोल पड़ा, तुम ठीक कहते हो। मैं भी सही मानता हूँ।

तीसरे ने उससे कहा - रुको, तुम्हारा तो कोई अस्तित्व ही नहीं। जो भविष्य के विचारों में डूबा रहता है, वह कहीं नहीं पहुंच सकता।

बेचारे दूसरे का मुंह लटक गया।

तब तीसरे ने कहा - भाईयों, असली हस्ती तो मेरी है।

दोनों एक स्वर में बोले-तुम कौन हो?

उसने मुस्कराकर कहा - मेरा नाम वर्तमान है,सामने का क्षण। जो सामने के क्षण को तुम दोनों के चक्कर में खो देता है, वह कहीं का नहीं रहता। इसलिए मेरा सिद्धांत है,सामने के क्षण में जीओ। जो इस सिद्धांत पर आचरण करते हैं, उन्हीं का जीवन सार्थक होता है।

तीसरे राहगीर के आगे दोनों का सिर झुक गया। वे चुपचाप आगे बढ़ गये

सुख देने का आनंद

कभी-कभी किसी जरूरतमंद व्यक्ति के जीवन को एक छोटे उपहार द्वारा भी असीम आनंद से भरा जा सकता है।

मानव स्वभाव के भी विविध रंग हैं। सम्बंधों में अपनापन जिंदगी को उल्लास से भर देता है, वहीं समर्पण किसी के लिए भी प्रेरणा बन जाता है। घटना करीबन दो वर्ष पूर्व की है, सिटी बस मे सफर के दौरान मेरी अगली सीट पर एक महिला और एक वृद्धा बैठी हुई थी। उनमें बातचीत से लगा कि वह महिला अध्यापिका थी। उनकी वार्ता ने मेरा ध्यान खींचा तो पाया कि वृद्धा महिला से उसकी पहनी चूड़ियों की तारीफ कर रही थी। उसने उत्सुकता प्रकट करते हुए पूछा बिटिया ये बढ़िया चूड़ियां कहां से और कितने की ली? महिला ने कहा माताजी ये साठ रूपए की हैं और मैंने आज शाम ही हैंडलूम हवेली से ली हैं। वृद्धा ने कहा, बेटा ये बड़ी सुंदर हैं और दिखती भी महंगी हैं।

वृद्धा ने उन्हें छूकर भी देखा तो महिला ने उन्हें उतारकर उस वृद्धा को देखने के लिए देते हुए कहा माताजी आप इन्हें पहनकर भी देखिए। वृद्धा ने उन्हें पहन भी लिया और उसके चेहरे पर आत्मसंतुष्टि के भावों को पढ़ते हुए महिला ने भी मन ही मन कुछ सोच लिया। वृद्धा ने पहनी हुई चूड़ियों को कई बार निहारा और कुछ निराशा से वापस करने लगी। महिला ने चूड़ियों को लेने से मना करते हुए कहा, माताजी जब आपको ये बहुत अच्छी लग रही हैं, तो आप ही इन्हें रख लें। वृद्धा ने कहा, बेटा मेरे पास तो इतने पैसे भी नहीं हैं, मैं इन्हें कैसे ले सकती हूं। महिला ने प्रत्युत्तर में कहा, एक तरफ तो आप मुझे बेटी कह रही हैं, तो क्या मैं अपनी मां को इतना सा उपहार भी नहीं दे सकती। आप चिंता न करें मैं अपने लिए और ले लूंगी। कुछ हीलो-हुज्जत के बाद वृद्धा ने उन्हें स्वीकार कर लिया और वह अपनी नई नवेली बेटी को तरह-तरह की अशीष देने लगी। इस महिला की दरियादिली पर मेरा मन उसके प्रति श्रद्धा से अभिभूत हो गया। सचमुच दूसरों की आत्मसंतुष्टि में जो पूर्णता हासिल होती है, वह कभी अपनी संतुष्टि में नहीं होती।

मंगलापुर-नेपाल। सेवाकेन्द्र के शिलान्यास कार्यक्रम में नेपाल के पूर्व मंत्री बालकृष्ण खांडा को ईश्वरीय उपहार देते हुए ब्र.कु.परनीता व ब्र.कु. कमला। साथ हैं ब्र.कु. नरेन्द्र तथा ब्र.कु.शैलेष।

कोहलपुर। शिवरात्रि महोत्सव का उद्घाटन करते शस्त्रप्रहरी उपनिरीक्षक कृष्ण कुमार व्यापा, ए.ने.क.पा. माओवादी थारूवान राज्य के सचिवालय सदस्य भीम प्रसाद देवकोटा, व्यापार संघ के अध्यक्ष चिंतामणि धिताल तथा ब्र.कु. दुर्गा।

मऊ। शिवरात्रि पर्व पर आयोजित शोभा यात्रा का शुभारम्भ करते हुए विशिष्ट न्यायिक मजिस्ट्रेट बृजराज सिंह सिसौदिया एवं पूर्व नगरपालिका अध्यक्षा सुश्री राना खातून जी तथा ब्र.कु. भाई-बहनें।

मुजफ्फरनगर-गाँधीनगर। शिव ध्वजारोहण के पश्चात् परमात्म स्मृति में जेल अधीक्षक भ्राता एस.आर. चौधरी , ब्र.कु. पूनम एवं ब्र.कु. अमिता तथा अन्य।

बोरीवली वेस्ट। महाशिवरात्रि पर्व पर द्वादश ज्योर्तिलिंगम का उद्घाटन करते हुए कॉरपोरेटर शिवा शेट्टी, जिला प्रतिनिधि भूषण पाटिल, सांसद संजय निरूपम, ब्र.कु. बिन्दु, विधायक गोपाल शेट्टी, डॉ. पी.वी. शेट्टी सेक्रेटरी (एम.सी.ए.)।

नागौर। शिवध्वजारोहण के पश्चात् उपखण्ड अधिकारी पुष्पादेवी पंवार, एडवोकेट भगवान सिंह एवं ब्र.कु. अनिता तथा अन्य।